

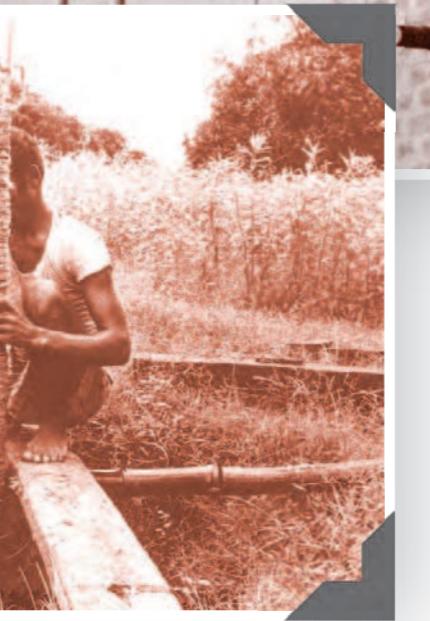
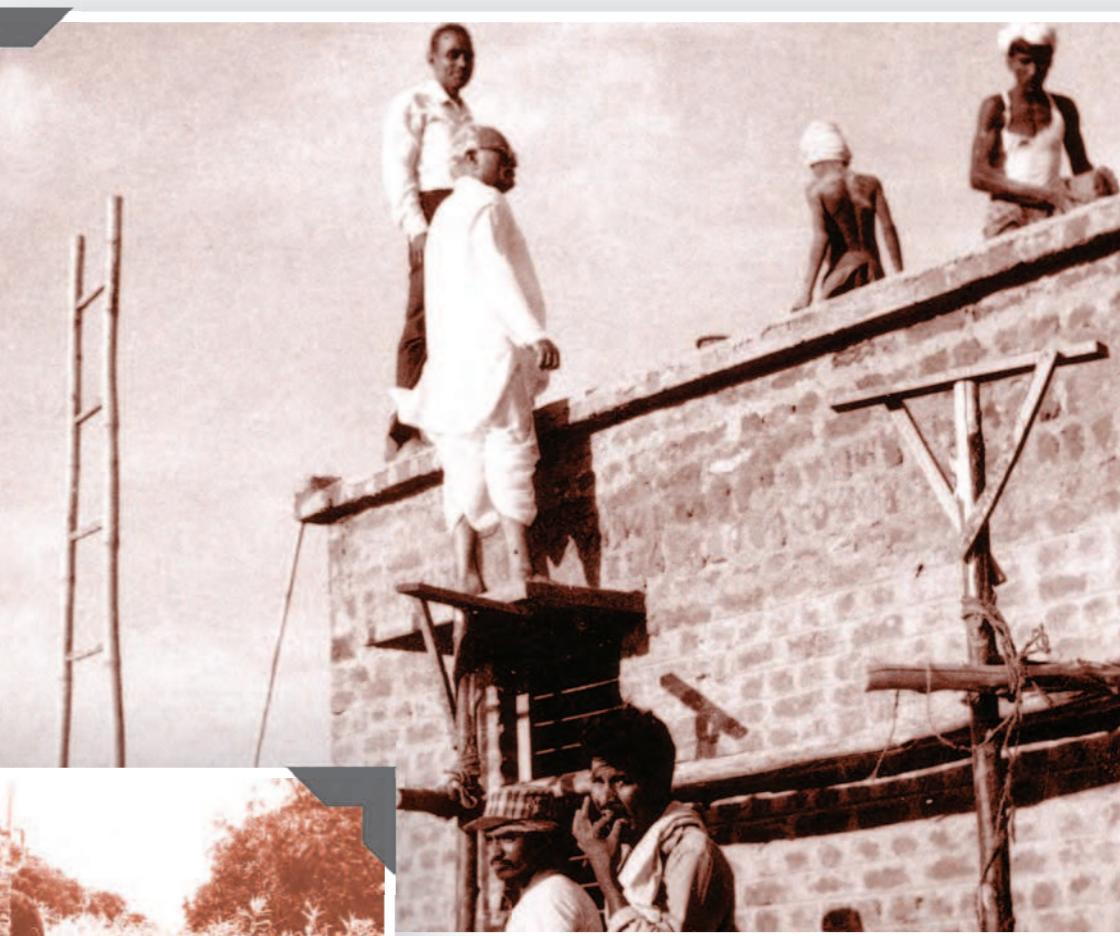
जीवन-यात्रा



राष्ट्रहित के लिए हूँ।"

केवल 24 दिन बाद ही
इंदिरा गांधी ने चरण सिंह के
पांवों के नीचे से प्रधानमंत्री की
कुर्सी खिसका ली और जनता
पार्टी सरकार का प्रयोग
धराशायी हो गया। अपनी
आँखों के सामने दलविहीन
लोकतंत्र के अपने स्वप्न का
दल और वोट की राजनीति
द्वारा अपहरण और हत्या होते
देखकर भग्नहृदय जे.पी. 8
अक्टूबर 1979 को महाप्रयाण
कर गए। नानाजी का दम भी
राजनीति में घुटने लगा था, वे
उससे बाहर निकलने के लिए
व्याकुल थे। किन्तु चंद्रशेखर
और मित्रों के आग्रह और
जनता पार्टी व उसकी सरकार
के पतन को रोकने के लिए वे
प्रयासरत रहे। अक्टूबर 1979 में
उन्होंने अंग्रेजी और हिन्दी में
'आर.एस.एस. : विक्रिम ऑफ
स्लैण्डर' शीर्षक पुस्तक प्रकाशित
की। यह पुस्तक राष्ट्रीय
स्वयंसेवक संघ और भारतीय
जनसंघ की रचनात्मक भूमिका,
संपूर्ण क्रांति आंदोलन और
जनता पार्टी की अन्तर्कलह पर
एक प्रामाणिक समकालीन
दस्तावेज है। जनता पार्टी के
विघटन और जे.पी. के निधन से
व्यथित नानाजी ने दल और
वोट की सत्ता-राजनीति से पूरी
तरह मुंह मोड़ लिया।

1



के भीतर त
और सर्वार्गि
है। वे जन
विकास का
करने को त
उसके लिए
छुटकारा प
इस दिशा २
में उन्होंने २
एक वर्कव्य
अधिक आ

राजनीतिज्ञों को सत्ता से होकर रचनात्मक कार्य का उदाहरण प्रस्तुत करने का आग्रह किया। सत्ताखड़े व महामंत्री की ओर से आये यह वक्तव्य बहुत अधिक रहा। किसी ने उनकी सन्नीहीं सुना पर नानाजी अपने पथ निश्चित कर चुके थे। अक्टूबर 1978 को उन्होंने में लोकनायक जयप्रकाश उपस्थिति में उन्होंने एक ऐतिहासिक वक्तव्य देकर राजनीति से अपने सन्धारणा कर दी। उन्होंने कर दिया कि अब वे को चुनाव नहीं लड़ेंगे और प्रसमय अराजनीतिक रचना कार्य को समर्पित करेंगे। नानाजी अपनी आयु के पूरे कर रहे थे। संगठन और राजनीतिक कार्य का वर्ष का लम्बा अनुभव उपास था। वे अपनी लोक और प्रभाव के शिखर पर देश के सभी शीर्ष राजनेता पत्रकारों, समाजसेवकों एवं उद्योगपतियों से उनका अनौपचारिक निकट संबंध गया था। अद्भुत कल्पना संगठन-कुशलता व योजना और साधन-संग्रहक की लेकर वे रचनात्मक क्षेत्र पढ़े।